Issue-4 Vol-1
Jan.2015

ISSN-2250-0383
IMPACT FACTOR - 0.421

शोधांकन

शोधांकन

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में समसामायिक समस्याएँ

परामर्शदाता
प्राचार्य डॉ. अंकुश आहेर

संपादक
प्रा.नामदेव शितोळे

Scanned by CamScanner

(RNI MAHMUL/02988/13/1/2011-TC VERIFICATION DATE 6/7/2011)

ISSN-2250-0383
Impact Factor -0.421

International Multi disciplinary Research Journal

शोधांकन

विशेषांक

हिंदी विषय की द्वि-दिवसीय राज्य स्तरीय संगोष्ठी

इक्कीसवी सदी के हिंदी साहित्य में समसामायिक समस्याएँ

दि.29 - 30दिसंबर २०१४

परामर्शदाता
डॉ आहेर अंकुश
प्रधानाचार्य
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय पिंपळगाव पिसा
तहसिलश्रीगोंदा जिला अहमदनगर

संपादक
प्रा शितोळे नामदेव
अध्यक्ष हिंदी विभाग
सावित्रीबाई कला महाविद्यालय पिंपळगाव पिसा
तहसिलश्रीगोंदा जिला अहमदनगर

(The Editor, Editorial Board & Publisher assume no responsibility for statements and opinions expressed by the authors in this souvenir Abstract.)

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.क	नाम	शीर्षक	प.क
१	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई	धर्म की पुनःव्याख्या की तलाश 'सेज पर संस्कृत'	१ - ६
२	प्रो. डॉ. सुषमा विश्वनाथ कोंडे	इक्कीसवी शताब्दी की आधुनिक समस्याएँ (मीडिया के विशेष संदर्भ में)	७ - १२
३	प्रा.डॉ. दत्तात्रय सदाशिव अनारसे	हिंदी साहित्य और सांप्रदायि ता	१३ - १९
४	प्रा. नानासाहेब जावळे	पारिवारिक समस्याओं का कारुण्यपूर्ण दस्तावेज 'घर'	२० - २६
५	प्रा. मनोहर जमदाडे	सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में सामाजिक संघर्ष	२७ - ३०
६	कृष्ण कुमार यादव	समकालीन परिवेश में बदलते साहित्य के सरोकार	३१ - ३७
७	प्रा.सौ. मोहिनी रणजित कुटे	२१वी सदी के हिन्दी कथा साहित्य में समसामाईक समस्या	३८ - ४१
८	लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब माने	"मुन्नी मोबाइल" उपन्यास में निहित सामाजिक समस्याएँ	४२ - ४७
९	निरगुडे रवींद्र	उपन्यास साहित्य में चित्रित समसामायिक समस्याएँ ('सूत्रधार' एवं 'जंगल जहाँ शुरु होता' है उपन्यासों के संदर्भ में... ।)	४८ - ५३
१०	प्रा.रसाळ सुरेश	हिंदी कहानी का विकास	५४ - ५९
११	वैशाली सुधाकर झगडे	"शिवप्रसाद सिंह का कहानी साहित्यः नारी समस्याएँ"	६० - ६७
१२	प्रा. नानासाहेब जावळे	'विजय तेंडुलकर' के नाटक साहित्य में जीवनमूल्य	६७ - ७४
१३	प्रा. मनोहर जमदाडे	'हिंदी की महिला साहित्यकारों की आत्मकथाओं का कथ्य'	७५ - ८५
१४	प्रा.शितोळे नामदेव ज्ञानदेव	'ढाई घर' उपन्यास में चित्रित परिवर्तित स्त्री - पुरुष संबंध	८६ - ९२

Scanned by CamScanner

'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में निहित सामाजिक समस्याएँ

लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब माने
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर , जिला– पुणे ।

इक्कीसवीं सदी की सामाजिक समस्याओं पर जब विचार शुरु हो जाता है तो यह बात समाने आती है कि केवल इक्कीसवीं सदी की अपनी कोई नवीन समास्याएँ नहीं हैं। ये समस्याएँ बीसवीं सदी के समाज से होती हुई इक्कीसवीं सदी में आ गई हैं और वें अधिक विकराल रुप धारण कर रही हैं । जिनका प्रस्फुटीकरण इक्कीसवीं सदी के साहित्य में हुआ है। इन समस्याओं में गॉवों, और छोटे–बडे शहरों के अतिरिक्त महानगरों तथा उसके आसपास विकसित हो रहे इलकों की भिन्न–भिन्न समस्याएँ हैं। अतः दिल्ली शहर और उसके आसपास के गॉवों की समस्याओं पर **'मुन्नी मोबाइल'**नामक उपन्यास के माध्यम से**'प्रदीप सौरभ'**जी नेयथार्थता के साथ प्रकाश डाला है । इस उपन्यास का प्रथम संस्करण सन् 2009 में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से निकला है । इसमें लेखक ने मुन्नी की जीवन कहानी को आनंद भारती के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । मुन्नी शादी के बाद अपने पति नंदलाल के साथ बिहार से दिल्ली से सटे साहिबाबाद गॉव में आती है । जिस समय वह यहॉ आई थी, उस समय वह एक सीधी–सादीअनपढ औरत थी । बैंकों से लेकर सभी सरकारी काम अंगूठा देकर करती थी । जैसे ही दिल्ली और साहिबाबाद के वातावरण में वह ढ़लने लगती है तो उसे अपनी गृहस्थी चलाने के लिए छोटे–मोटे काम करना जरुरी महसूस होता है । वह स्वेटर बुनने से लेकर कई घरों में खाना बनाने का काम करने लगती है । इसी वजह से उसका परिचय आनंद भारती (जो जानमाने पत्रकार हैं) से हो जाता है । इनसे वह दिवाली के त्योहार परउपहार के रुप में मोबाइल लेती है।

शहरी वातावरण के चलते और पैसा कमाने की धून से वह सीधी–सादी मुन्नी से दबंग मुन्नी मोइबल नाम से प्रसिद्ध हो जाती है । पलस्वरुप वह रुपयों के लालच से प्रभावित होकर अनेक अनैतिक कामों में जुट जाती है । इसके चलते वह साहिबाबाद में पक्का माकान भी बनाती है । अपने छह बच्चों को ठीक तरह से पालने भी लगती है । अनैतिक कामों से मिले पैसों से वह बसों की मालकिन भी बन जाती है। फिर भी पैसे कमाने की धून उस पर छाई ही रहती है । इसी धून के परिणाम स्वरुप वह लडकियों

Scanned by CamScanner

सप्लाई करने लगती है और कॉल गर्ल्स की प्रसिद्ध सप्लायर बन जाती है । उसकी इस तरक्की से उसके समान दूसरे दलाल जलने लगते हैं । परिणाम में यें लोग मुन्नी की हत्या कर देते हैं । इसी तरह की इस उपन्यास की कथा है। जिसे लेखक ने देश–विदेश के कई अनुभवों के साथ उद्घाटित किया है । मुन्नी के इस जीवन प्रवाह को अंकित करते हुए लेखक ने अनेक सामाजिक समस्याओं को भी उकेरा है। जो समस्याएँ साल–दर–साल विकराल बनती जा रही हैं। इन समस्याओं का जिक्र नीचे किया जा रहा है ।

बीसवीं शती के उत्तरार्ध से भारत में छोटे–बड़े शहरों का विकास तेजी होने लगा है । चुँकि अधिकांश लोगों को शहर की चकाचौंध, रोजगार प्राप्ति की संभावनाएँ, उच्च स्तर का रहन–सहन, शिक्षा की अच्छी व्यवस्था, रुपये कमाने की लालसा आदि बातें आकर्षित करने लगी है। परिणाम स्वरुप शेकडों लोग शहरों में दाखिल हो रहे हैं। अतः शहरों का विकास एवं विस्तार तेजी से होने लगा है। ऐसे में शहरों में अनेक तरह की समस्याएँ उत्पन्न होने लगी हैं। महनगरों में तो छोट–बड़े शहरों से अधिक जनसंख्या आने लगी हैं । ऐसे में मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय लोगों को महानगरों में आवास का प्रबंध करना कठिन–से–कठिनत्तर हो गया है। इसलिए ये लोग शहरों के आसपास के गॉवों में पनाह लेने के लिए मजबूर हो जाते हैं और आवास की समस्या को दूर करने की कोशिश करते हैं । चुँकि महानगरों में अब उनके लायक जगह बची ही नहीं है। या मंहगाई के चलते वें बची–खुची जगह को खरीद नहीं पाते । परिणाम स्वरुप उन्हें महानगरों के आसपास के गॉवों में आश्रय लेना पड़ता है । अतः महानगरों के आसपास के गॉवों का विस्तार भी अधिक मात्रा में होने लगा है । जिस तरह से विस्तार होने लगा है , उसी तरह से अनेक समस्याएँ भी बढ़ने लगी हैं ।

दिल्ली जो देश की राजधानी है । इसके आसपास बसे साहिबाबाद, गाजियाबाद, नोएडा, फरिदाबाद आदि गॉवों का विस्तार भी काफी बढ़ने लगा है । चंद वर्षों के बाद इन गॉवों में मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय परिवारों को घर के लिए जमीन खरीदना असंभव कार्य बन जाएगा । बिहार , झारखंड, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, आसाम आदि राज्यों से काम की तलाश में आए हुए लोग काफी तादाद में इन गॉवों में बसे हैं और यह सिलसिला निरंतर जारी है। इन गॉवों में जों लोंग कई पीढियों से रहते आ रहे हैं, वें लोग बाहरी लोगों पर हमेशा रुतबा जमाते रहते हैं । अतः उनमें और बाहर से आए हुए लोगों में हमेशा तनातनी का माहौल बना रहता है। अतः इस उपन्यास की नायिका मुन्नी (जिसका असली नाम बिंदु यादव है।) भी अपने पति नंदलाल के साथ बिहार के बक्सर से साहिबाबाद में आकर बसी है ।

Scanned by CamScanner

चुँकि उसके पति नंदलाल को अपने पिताजी की जगह पर शराब बनानेवाली फैक्ट्री मेकिन मोहन में छोटी सी नौकरी मिल गई थी। उसने यहाँ आकर पक्का मकान भी बना लिया है । मुन्नी की इस तरक्की से साहिबाबाद में पहले से रह रहे जाट और गुर्जर जलने लगे हैं । मुन्नी की तरह कई बिहारी भी यहाँ आकर बसे हुए हैं । उनकी संख्या जाट और गुर्जरों से भी अधिक हो चुकी है । फिर भी जाट और गुर्जरों में दबदबा कायम रखने की होड़ अब भी कम नहीं हुई है। उधर बिहारी लोग भी इनसे पंगा लेने में कोई कोताई नहीं बरतते हैं। अक्सर किसी–न–किसी बात पर स्थानीय और बिहारियों के बीच लाठी–गोली चलती रहती है। पुलिस का गॉव में लगातार आना–जाना होने के बावजूद भी लाठी–गोली का मामला कम नहीं हो रहा है। पुलिस रिश्वत लेकर ऐसे मामलों को रफा–दफा कर देती है। परिणाम स्वरुप यहाँ पर गुंडा–गर्दी कायम है और वह निरंतर बढ़ती ही जा रही है । इसका खामियाजा बाहर से आकर बसे निरापराध परिवारों को भुगतना पड़ रहा है । इसी समस्या को उद्घाटित करते हुए लेखक लिखते हैं कि **"दिल्ली की नाक के नीचे बसे इस गॉव में गॉव जैसा कुछ भी नहीं रह गया है । झगड़े के लिए यहाँ कोई खास वजह की जरुरत नहीं होती । कौवा कान ले गया। कान को देखे बिना ही जंग छिड़ जाती है ।"**[1] हर छोटे–बड़ेशहर के आसपास के इलाकों में इसी तरह की गुंड़ा–गर्दी फैली दिखाई देती है । ऐसे लोगों को पुलिस के साथ ही स्थानीय नेताओं का भी संरक्षण मिलता है । परिणाम स्वरुप शहरों में गुंड़ा–गर्दी बढ़ने लगी है। ऐसे महौल में मुन्नी जैसे अनेक परिवारों को अपना जीवन यापन करना पड़ रहा है । वें तो दिल्ली में ही घर बनाने की मंशा लिए आए थे , परंतु दिल्ली में जगह लेने की अपनी असमर्थता के कारण उन्हें साहिबाबाद जैसे गॉवों रहना पड़ रहा है । यहाँ पर गुंडा–गर्दी के चलते आदमी की कीमत बहुत ही सस्ती हो गई है । दिल्ली अब राजधानी के नाम पर आदमियों की श्लाटर हाउस बन गई है। इसमें आदमी की कीमत कसाई के दूकान में कटने वाले मुर्गे से भी सस्ती हो गई है । इसी को लेखक यूँ उजागर करते हैं –**"असल में वे यहाँ मजबूरी में रहते हैं । रहना तो वे दिल्ली में ही चाहते थे, लेकिन मंहगी दिल्ली में मकान खरीदने का सपना उनका पूरा नहीं हुआ । अब आने वाले समय में इस रीजन में भी मिडिल क्लास के लिए मकान खरीदना मुष्किल होगा। वैसे भी दिल्ली अब आदमियों का श्लाटर हाउस हो गया है । हर आदमी यहाँ कट रहा है । कसाईबाड़े में मुर्गे की कीमत से भी सस्ती आदमी की कीमत है यहाँ ।"**[2]

जहाँ एक ओर शहरों के बढ़ते विस्तारीकरण के कारण मजबूरी में कई लोगों को आसपास के गॉवों में आश्रय लेना पड रहा है । वहीं दूसरी ओर इन्हें गुंडा–गर्दी के साथ–साथ अनेक समस्याओं से भी झूझना पड रहा है । एक

Scanned by CamScanner

तो साहिबाबाद अपने विकास की रफ्तार अभी –अभी पकड़ने लगा है । ऐसे में यहाँ अनेक सुविधाओं का अभाव है । सरकारी चिकित्सा सुविधा तो नाम मात्र के लिए भी उपलब्ध नहीं है । इसी के चलते शशि खोखरा जैसी झोलाछाप डाक्टरनी विविध हथकंडों को अपनाकर पैसा जमा करके एक नर्सिंग होम बना लेती है और उसमें कई अवैध धंधे शुरु कर देती है । पैसा कमाने की लालसा के चलते वह अवैध तरीके से गर्भपात भी करने लगी है । मुन्नी में भी पैसे कमाने की धून अधिक है। इसलिए वह भी इसमें सहयोग देने लगी है। फलस्वरुप डाक्टरनी और मुन्नी को ज्यादा पैसे मिलने लगे हैं। सोलह से बीस साल के बीच के मनचले जोड़े दिल्ली से यहाँ गर्भपात कराने आ जाते हैं । उनसे शशि खोखरा भारी रकम वसूल करती है। कुछ रुपये मुन्नी को भी देती है । अतः गर्भपात कराने का यह अवैध धंधा दिल्ली शहर के नजदीक ही खूलेआम फलने–फूलने लगा है ।

कई युवा प्यार के नाम पर नादान लड़कियों को फॅसाते हैं और उनसे सेक्स करते हैं। इसी कारण असमय ही लड़की गर्भवती बन जाती है और लोकलाज के चलते वह ऐसे नर्सिंग होमों में जाकर गर्भपात करवाती है । यहाँ यह भी बात स्पष्ट हो जाता है कि कई शादीशुदा जोड़े भी कन्या अर्भक गिराने के लिए ऐसे लोगों का आश्रय लेते हैं। इस तरह के धंधे से इस परिसर के सामाजिक जीवन पर बुरा असर पड़ने लगा है । इसको अंकित करते हुए लेखक शशि खोखरा और मुन्नी के बारे लिखते हैं कि –**"असल में डाक्टरनी अवैध गर्भपात कराती थी। दिल्ली तक से मनचले युवा जोड़े बच्चे गिरवाने आते थे। वह मोटी रकम लेती थी । गर्भपात में वह मुन्नी से सहयोग लेने लगी । धीरे–धीरे मुन्नी नर्स बन गई। जच्चा–बच्चा करने के लिए उसे रात–विरात लोग ले जाने लगे । पॉच सौ रुपये उसकी रात की फीस थी । डाक्टरनी के नर्सिंग होम में रात को रुकने और मरीज की तिमारदारी करने के उसे सौ रुपये मिलने लगे । डाक्टरनी के यहाँ मरीज लाने पर भी उसे कमीषन मिलता था ।"**[3] जहाँ एक ओर दिल्ली के पास ही अवैध तरीके से गर्भपात कराने के धंधे खुलेआम चल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर वेश्या व्यवसाय भी कुकुरमुत्ते की तरह कहीं भी अंकुरित होने लगा है। अच्छे खानदान की पढ़ी–लिखी लड़कियॉ भी पैसे कमाने के चक्कर में ऐसे व्यवसायों में लगातार शामिल हो रही हैं । कई लड़कियॉ आर्थिक अभाव तथा पढ़ाई का खर्चा चलाने और ऐश करने की मंशा से भी इन धंधों में दाखिल हो रही हैं ।अतः दिल्ली शहर में रहने का प्रबंध पैसे अभाव में नहीं हो पाता है । इसलिए ये लड़कियॉ आसपास के गॉवों में रहकर वेश्या व्यवसाय में जुड जाती हैं । इन लड़कियॉ को शाहरी भाषा में कॉल गर्ल्स नाम से जाना जाता है । इसी तरह से कॉल गर्ल्स का प्रचलन भारत के कई शहरों में बढ़ने लगा है।

Scanned by CamScanner

हम देख सकते हैं कि मुंबई, दिल्ली , आगरा, पटना, कलकत्ता, बेंगलोर,. पणजी, चेन्नई तथा पुणे जैसे अनेक नगरों में कॉल गर्ल्स की तादाद बहुत ज्यादा मात्रा में बढ़ गई है। बडे–बडे उद्योगपति, अभिनेता, रईसजादे, बिल्डर आदि इन लडकियों के साथ सेक्स करते हैं और उन्हें भारी रकम अदा करते हैं । परिणाम स्वरुप अनेक लड़कियॉ इस व्यवसाय की ओर आकर्षित होने लगी हैं ।ऐसी लड़कियॉ साहिबाबाद में भी दिखाई देने लगी हैं । जों समूह में रहती हैं और रात को किसी बडे आदमी की गाड़ी में बैठकर रात रंगीन करने के लिए निकल जाती हैं । इसका परिणाम यह हो रहा है कि इनकी देखा–देखी मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़कियॉ भी इस धंधे में शामिल हो रही हैं। वें भी चोरी छूपे इसी तरह के धंधे करने लगी हैं। यह इक्कीसवीं सदी की एक गंभीर समस्या बन गई है । इसी समस्या का पर्दाफाश करते हुए प्रदीप सौरभ लिखते हैं कि **"सहिबाबाद गॉव में इन दिनों कुछ अलग–सी हलचल देखने में आ रही है । अपराधियों का निवास तो यहॉ पहले से ही था, अब कुछ लड़कियॉ समूह में यहॉ रहने लगी हैं। दिन में सोती हैं और रात को सज–धज कर निकल जाती हैं । इनमें कुछ बंगाल की हैं तो कुछ गुजरात की और नेपाल की । .....। यह तो तय है कि ये लड़कियॉ कॉल सेंटरों में काम नहीं करतीं । आने वाली गाडियॉ कॉल सेंटरों की कैब नहीं हैं ।"** [4]

इसके अतिरिक्त आजकल शहरों के आसपास कॉल सेंटरों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हो चुकी है । इसमें काम करने वाले युवाओं को काफी पैसा मिलता है। कॉल सेंटरों की चकाचौंध , काम के बदले मिलनेवाली भारी रकम, पब और डिस्कों में आयोजित पार्टियों की रंगीन रातें, सेक्स तथा नशा आदि बातें युवाओं को ज्यादा आकर्षित करती हैं । परिणाम स्वरुप कॉल सेंटरों के कर्मचारियों की महीने में एक–दो पार्टियॉ डिस्कों में हो ही जाती है । इन कॉल सेंटरों के युवाओं के जीवन में नैतिकता एवं अनैतिकता कोई मायने नहीं रखती । **'लिव इन रिलेषन', 'टू मिनट प्लीज'** (इसका मतलब है कि कॉल सेंटर के टैरेस या फायर प्लेसेस में सेक्स), **'वन नाइट स्टैंड'** आदि तथा लडकियों का लडके बदलना और लड़कों का लड़कियॉ बदलना तो आम बात हो गई है । पब और डिस्कों में आयोजित पार्टियों में शराब, सिगरेट, ड्रग्स या अन्य नशीली चीजों का भी प्रबंध रहता है। इसके चलते युवाओं में नशाखोरी की आदतबढ़ने लगी है । फलस्वरुप इन युवाओं में कई बीमारियॉ फैलने लगी हैं । अगर इसी तरह से ये युवा नशे में डूबे रहेंगे तो यह देश के लिए घातक सिद्ध होगा। लेखक कॉल सेंटरों के युवाओं में बढ़ती नशे की आदत को यूँ उद्धृत करते हैं **"कॉल सेंटरों ने ड्रग की बीमारी भी पैदा की है। आसपास के ढ़बों में माल भरी सिगरेट आसानी से** मिल जाती है। बस इसके लिए ड्रग बेचने वाले से कनेक्शन की दरकार

Scanned by CamScanner

होती है। एक्सटेसी नाम की टेबलेट भी काफी प्रचलन में है। इसको खाने के बाद एक काल्पनिक दुनिया के दर्षन होते हैं। डिस्कों में भी यह आसानी से मिल जाती हैं। डिस्को में महीने में एक–दो पार्टी कॉल सेंटरों के युवाओं की होना आम बात है।"[5] कॉल सेंटरों में काम करने वाले युवाओं का दिन, रात के दस बजे के बाद शुरु हो जाता है और सुबह होने से पहले ही उनकी रात हो जाती है। ऐसे में उन्हें पार्टी में जाना और वहॉ का आनंद लेना अच्छा लगता है। विदेश से आनेवाले इंसेन्टिव को कंपनी वाले इन्हीं डिस्कों में खर्च करते हैं। परिणाम स्वरुप युवा सेक्स और नशे के आदी बनते जा रहे हैं । अतः ऐसी समस्या पर समय रहते ही अंकुश लगाना अनिवार्य है। अन्यथा इनकी देखा–देखी अगली पीढी भी इनमें शामिल हो जाएगी और भारत एक नशेड़ी राष्ट्र बनकर विनाश के गर्त में चला जाएगा। इसी तरह की अनेक समस्याओं को लेखक ने मुन्नी के जीवन प्रवाह के माध्यम से उजागर किया है।

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में शहरों की संख्या जितनी तीव्र गति से बढ़ने लगी हैं । उसी मात्रा में सामाजिक समस्याओं का भी प्रचलन बढ़ने लगा है। .....
.....

संदर्भ सूची :

1) मुन्नी मोबाइल–प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाषन,, दरियागंज, नई दिल्ली ।

Scanned by CamScanner

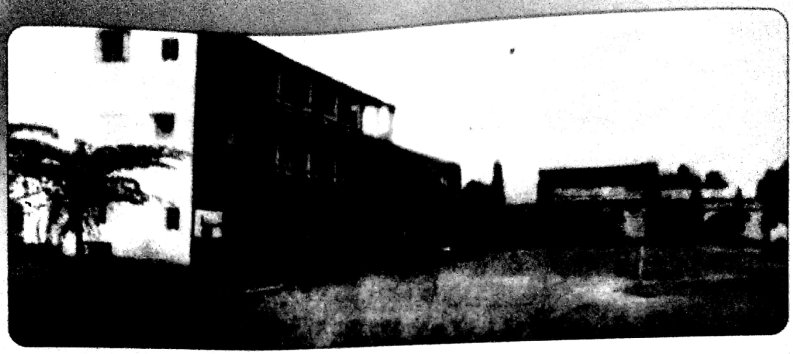

BOOK - POST

To,.....

.....

.....

Dr. Radhakrishna Joshi

PRATHMESH PRAKASHAN

22 B, 'Prathmesh' Omkareshwar Bunglow,
Behind Savedi Bus-Stand, Savedi, Ahmednagar- 414001

•www shodhankan.com • Mail id - shodhankan10@gmail.com

•Cell No : 8888390066/ 9421959789 /9890308390 / 9422727614 /9421530855

Scanned by CamScanner